

# POEM RECITATION COMPETITION

Power of the verse in depicting a woman's universe



STUDENT COORDINATOR

**Vivek Ojah**  
**BA Honors History**  
**2020-23**

FACULTY COORDINATOR

**Dr. Sanjana Sharma**  
**Marwaha**

# TABLE OF CONTENTS

**01** Event Overview

---

**02** Objectives of Event

---

**03** Event Highlights

---

**04** Participants and Judges

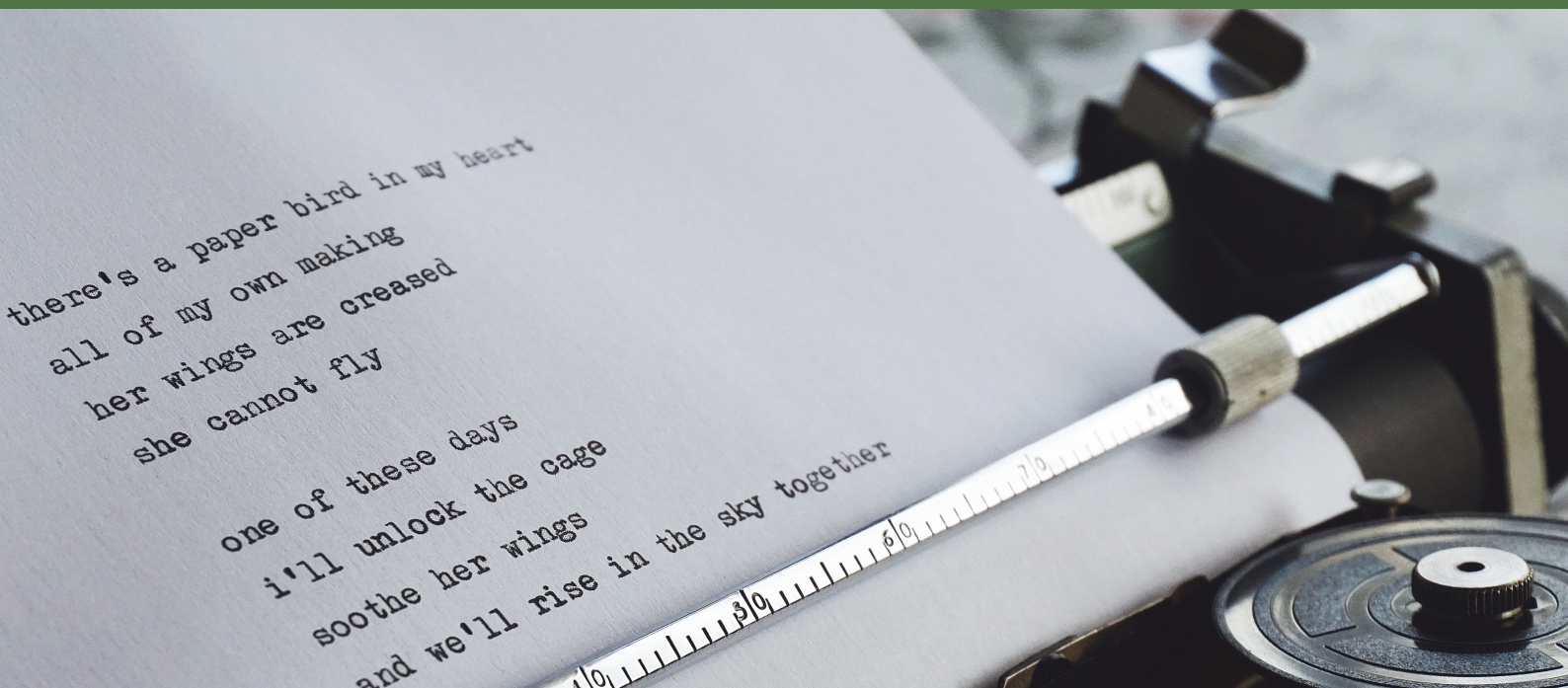
---

**05** List of Winners

---

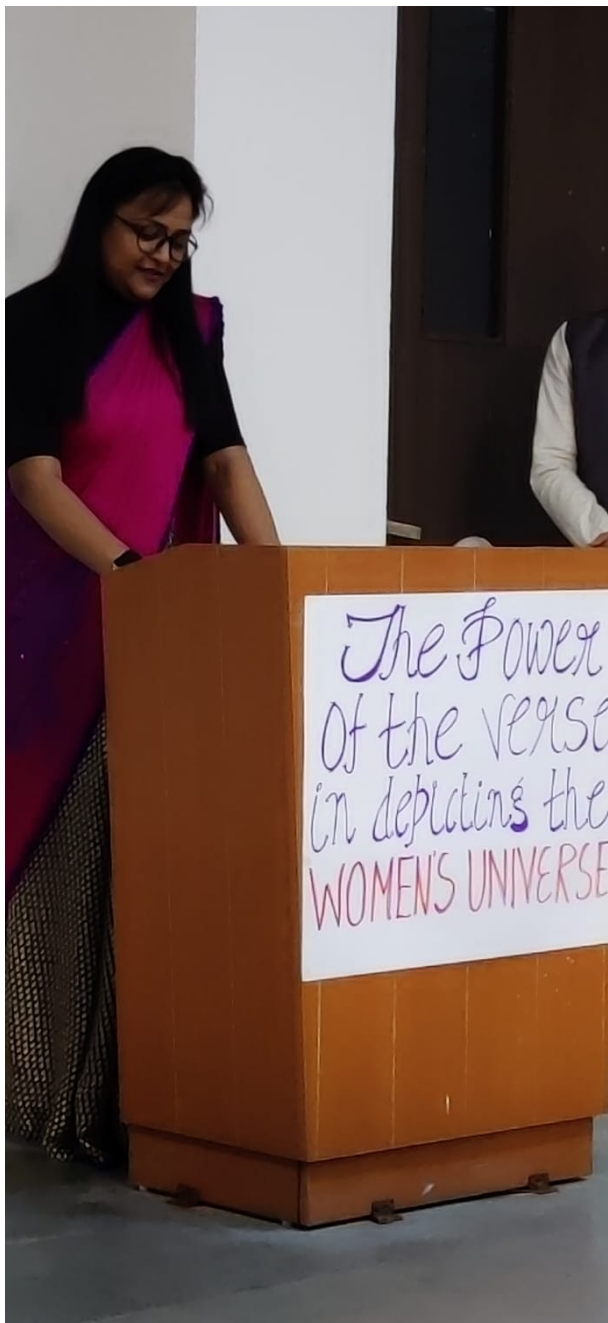
**06** Photos

---



# EVENT OVERVIEW

कवि की कलमकारी  
एक नारी सब पर भारी



was held on 14th February 2022 as a part of the celebration of International Women's Day celebrations. The event was organized by AISS students under the guidance of Dr. Sanjana Sharma Marwaha.

The event was organized based on Goal 5 of the sustainable developmental goals and to mark the Celebration and importance of social belongingness and self-efficacy.

The event aimed to celebrate women in the beautiful words of the participants in the poetic form. The tag line of the event was "The power of the verse in depicting the women's universe".

# OBJECTIVES AND HIGHLIGHTS

Event started exactly at 2:10pm with the beautiful lines of the Host i.e., Dewanshu as he welcomes judges, participants, and the audiences. He talks for about 5 minutes about his thoughts for women in form of speech and poem both.

Then to motivate the participants Prateek Anand from Sociology 4th Sem came up with some phrases of Rashmi Rathi poem which was written by Ramdhari Singh Dinkar.

After his wonderful recitation our events continues with the performances of the participants in which everyone was mesmerized as everyone has spoken so well.

"Poetry lifts the veil from the hidden beauty of the world, and makes familiar objects be as if they were not familiar."

PERCY BYSSHE SHELLEY

# PARTICIPANTS & JUDGES

## List of Participants

Roshini AIRS

Ayush - BA Honors History

Anas Zahid - Behaviour and Allied  
Sciences

Kanhaiya - BA Honors History

Vini Bhardwaj - MA Social Work

Sanskriti - BA Honors History

Dewanshi Goswami- BA Honors Sociology

Pragya - M.Ed AIE

Sauhard - BA Honors History

Swapnil - BA Honors Political Science

Manika - BA Honors Sociology



## Judges of Event

Prof. Dr. Veenus Jain.

Dr. Pushparaj



# WINNERS' POEMS



एक चीख रात को चीर के माँ के हृदय तक आई  
और एक नन्हीं सी आवज सुन, माँ तो बहुत रोई  
“माँ मुझे मत मारो, मत मारो इस नन्हीं सी जान को,  
जनम से पहले ही, मत मारो इस अनजान को”

बस माँ ही सुन सकती थी, उसकी करुण पुकार  
करना तो बहुत कुछ चाहती थी, पर वो थी लाचार  
आखिर वो क्या करती, वो डरी सहमी थी औरत  
न तो उससे इतनी हिम्मत थी कि वे करती बगावत

तो उसने भरके आँखों में आँसू का मोती कहा  
“तेरी अच्छी किस्मत है जो तू जन्म नहीं लेती  
जन्म लेकर भी आखिर तू क्या करेगी  
इस समाज में औरत का कोई सम्मान नहीं”

क्या करेगी यहाँ आकर जहाँ तेरे लिए कोई प्यार नहीं  
तू ही है जो सारा जीवन दौहरी भूमिका निभाएगी  
सबकी सेवा करेगी तू, पर सम्मान कभी नहीं पायेगी  
अरे मेरी नन्हीं जान जन्म ना लेने में ही है तेरी  
भलाई।

यह सुनकर सामने से आवाज़ आई  
माँ तू सोच कर देख- जब ना रहेगी कोई कन्या यहाँ  
तब क्या मर्दों का मर्दों से ही विवाह के संजोग में  
सजेगा समाँ?

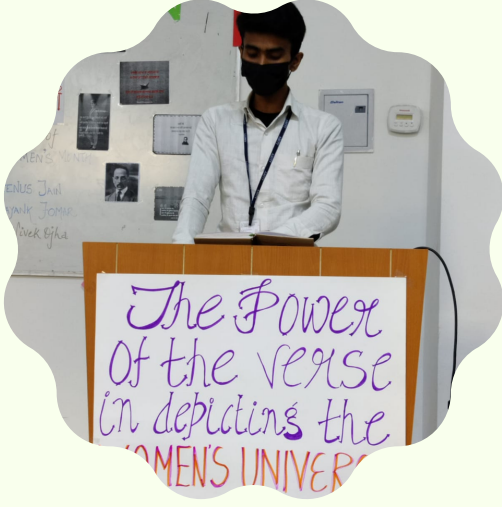
हर रोज भ्रूण में लाखो कन्याएँ अपने प्राण गवा देती है  
और जो उन साँसों की गिनने की भूल करे, उन्हें पैदा  
होने पर सज़ायेन मिलती हैं।  
क्यूँ समाज मे अब ये ठान लिया है, कि बेटों को ही  
गले लगाएंगे  
बेटी अगर गलती से भी आ गई, तो उसकी चिता वहीं  
सताएंगे

अपनी इसी नादानी पर एक दिन सौ- सौ आँसू  
बहाएंगे  
जब कन्या होगी केवल एक, और दास मर्द उससे शादी  
के ख्वाब सजाएँगे।  
इसलिए मत मारो गर्भ में कन्या को पिता बनने का  
फक्र जब भी उठाओ  
बेटी को भोज ना समझकर उनके पंखे से भी दुनिया  
मकर आओ।

बेटी नहीं होती कोई घाटे का सौदा,  
लक्ष्मी रूप में इस्को जिसने भी पूजा  
दरिद्र को भी सम्मन्न बना

*1st Position*  
*Devanshi Goswami, BA Honors*  
*Sociology*

# WINNERS' POEMS



सोच रहा हूँ क्या लिखूँ राधा लिखूँ या मिरा लिखूँ  
या 24 कैरेट का हीरा लिखूँ  
मेरे घर की शहनाई लिखूँ  
या लक्ष्मी है तो कमाई लिखूँ  
अपने में ही एक नेचर लिखूँ या मेरी पहली टीचर लिखूँ  
सिर का अपना बोझ लिखूँ, या एक अकेला फौज लिखूँ  
घर का एक आधार लिखूँ या चपल तेज तलवार लिखूँ  
मेरे घर की शान लिखूँ या ईश्वर का सम्मान लिखूँ  
बाबुल का घर छोड़ तुम्हारे घर में रहने आती है  
डोली जिसकी उठती है फिर अर्थी में ही जाती है  
पाई पाई जोड़कर घर को घर बनाती हैं  
हाथ उठाते हो उस पर तुमको शर्म नहीं आती है  
भूख उसे भी है पर खाना उसने खाया नहीं  
पता लगाओ देखो शायद पति दफ्तर से आया नहीं  
हर दिन की ये देरी उसके लिए समस्या भारी है  
इस समर्पण सहित तपस्या उसकी जारी है  
भाग मनाओ फिर भी तुमको छोड़ नहीं वो जाती है  
हाथ उठाते हो जिस पर तुमको शर्म नहीं आती है  
कभी नशे में कभी सनक तो कभी बहे जज्बातों में  
सहते सहते छाले पड़ गए मेहंदी वाले हाथों में  
इतने सब के बाद भी  
विश्वास नहीं खोया है  
रोया तो बहुत है मगर काजल नहीं धोया है  
एक तुम्हारी चाहत में हर दुख को वहीं भूलती हैं

हाथ उठाते जिस पर शर्म तुम्हें नहीं आती है  
अरे तुमको उसकी फिक्र नहीं है जिंदा है पर जिक्र नहीं है  
खुदगर्जी में ऐसे चूर हुए आंगन की तुलसी से दूर हुए  
नए जमाने में भी वो गीत पुराने गाती है  
हाथ उठाते जिसपर शर्म तुम्हें नहीं आती है  
एक तुम्हारा दंश यही है बेटी है वो वंश नहीं है  
जैसे कि तुम्हारा अंश नहीं है  
उस पर तुम्हारा अधिकार पूरा है  
लेकिन तुम्हारा He उस She के बिना अधूरा है  
लेकिन तुमने तो ये ठान लिया है  
भरा खजाना पराया धन मान लिया है  
अब जो तुम्हारा अपना है आंखों का जो सपना है  
पुण्य तुम्हारा नष्ट हुआ है बेटी हुई तो तुम्हें कष्ट हुआ है  
इतने सब के बाद भी तुमको बाप वही बनाती है  
हाथ उठाते जिस पर शर्म तुम्हें नहीं आती है  
लेकिन वो भी कब तक सहेगी अंधेरे में रौशनी कब तक  
रहेगी  
अब तुम्हारा न होना उसके लिए कोई कमी नहीं है  
अब उन आँखों में वो नमी नहीं है  
दिल में उसके एक तमन्ना बाकी है  
अभी कहानी का वो एक पन्ना बाकी है  
वो लक्ष्मी है तुम भगवान तो बनो वो सीता है तुम राम तो  
बनो  
हर जुल्म पर जो बोल उठे ऐसी आवाम तो बनो  
किसी की चीख किसी की कड़ाह लिखूँ  
एक मुस्कुराते हुए चेहरे की सिसकती आह लिखूँ  
क्योंकि ये सब उसके अंदर है  
वो औरत नहीं समंदर हैं।।

2nd Position

Anas Zaidi, Behaviour and Allied  
Sciences

# WINNERS' POEMS



Dear young women  
I hope you find you  
I hope you find love  
I see all the armour you wear  
I see all the jewels and gems of wisdom  
you share  
It's okay to shine, ma  
It's okay to shine  
It's okay to have pride, ma  
You don't have to live a lie  
It's okay to shine  
Don't let the violence fool you into silence  
convincing you that you're not worthy of  
space and time  
You might not know it yet  
but you got  
a multi-dimensional set of eyes  
looking out for you  
Someday  
you'll be part of that legacy  
and become a guiding light too  
Trust that what is meant for you  
is relying on you to show up  
Show up.

You can lose your religion  
but you will never lose your spirit  
Each of your breaths  
have minds and LIVES of their own  
I doubt we'll ever know the full impact of  
our presence  
but do you notice  
that even at your lowest  
your aura orbits this  
quantum measure of hopefulness?  
The more inner kindness  
the less the focus is of brokenness  
Young Woman I wish you enough  
I wish you enough time for all of your skills  
and talents  
I wish you more  
I wish you more revelations than  
disrespects and regrets  
and I beg you to believe in yourself  
more than your parents ever did  
I beg you to believe in yourself.  
Carry out your curiosities  
in spite of the corruptions you experience  
You let yourself free  
when you let yourself forgive  
So when you do (and I know you will)  
I hope you find you  
I hope you find love again

**3rd Position**  
**Sanskriti, BA Honors History**



# WINNERS' POEMS



Mai stree hun, mai naari hun,  
Mai kali hun, mai hi phulwari hun,  
Mai darshan hun, mai darpan hun,  
Mai naadh hun, mai garjan hun,  
Mai beti hun, mai maa hun  
Mai shree mat bhagwat geeta hun,  
Mai dropadi hun, mai hi seeta hun.

Mai dropadi hun, mai hi seeta hun  
Purshon ki is dunia me muje kaisi neeti dikhlayi  
Purshon ki is dunia me muje kaisi neeti dikhlayi  
Kabhi juye me har gaye, kabhi agni pareeksha  
dilvayi

Aur is ehsas se badhkar koi nard nahi hoskta hai  
Aur is ehsas se badhkar koi dard nahi hoskta hai  
To naari ka apman kare vo mard nahi hoskta hai

Mgar dunia ki har naari se mujhe ye kehna hai ki  
Roh mat,

● Tera aasun bhot keemti hai, Tera aasu bhot  
keemti hai

Tuh inhe vyarth khonahi sakti

● Kaid karle in aasuo ko ankho me, Samundar  
bana de

Tu kya hai chal, is dunia ko aaj dekha de

● Iss samundar se tuje, ek din sailaabh lana hai  
Is samaundarse tuj, ek din sailaabh lana hai

● Are jo koi nahi karskta, vahi toh karke dikhana  
hai

Aaj nahi toh kal tujhe shikhar tak jana hai

Apne zakhamon par malhum khud  
laga,  
Apne zakhamon par malhum khud  
laga,  
Uth khadi ho faulad ban kar dikha

Bhed na paye koi aisa vaar ban,  
Dhar ho jiski sabse tez aisi talwar ban  
Tu jann deti hai toh  
Dushto ka sanghar ban  
Prarambh ki paribhasha hai toh, ant  
ka bhi saadhan ban

Tu jeet hai na haar ban, Tu jeet hai na  
haar ban  
Laxmi ka swaroop hai toh, Kali ka bhi  
avtar ban

Badh chal aage, jaha koi na pohoch  
sakta  
Kar chal aisa jo koi nahi kar sakta

Uth khadi ho Faulad ban!  
Uth khadi ho Faulad bad!

Asaflta ek chunoti hai usse swikar  
karo

Kya kami reh gayi salo aur sudharo  
Karo jab tak na safal ho  
Nind chain

**3rd Position**

**Pragya, M.Ed AIE**

# PHOTO GALLERY

